B.A I (Hons) II Paper 26.7.20
S. Vyas...

नीति शास्त्र का अर्थ

नीति शास्त्र दो शब्दों के योग से बना है नीति + शास्त्र। नीति का शाब्दिक अर्थ है- मार्ग तथा शास्त्र का अर्थ है सीखना या सिखलाना। इस तरह नीति शास्त्र का शाब्दिक अर्थ हुआ उचित मार्ग पर चलने को बतलाना।

नीति शास्त्र मानव आचरण से सम्बन्धित एक ऐसा विज्ञान है जो मानव आचरण के सुन्दर-सुन्दर पहलू की विस्तृत व्याख्या का प्रकाश करता है। नीति शास्त्र का उद्देश्य है मानव आचरण का वास्तविक आदर्श स्थापित करना। अनेक दार्शनिकों ने अपने-अपने तरह से नीति शास्त्र को परिभाषित किया है—

अरस्तु ने नीति शास्त्र के सम्बन्ध में कहा है कि "नीति शास्त्र मानव-जीवन के परम लक्ष्य का अन्वेषण है।"

मैकेंजी के शब्दों में "मानव जीवन में सन्निहित आदर्श का विज्ञान नीतिशास्त्र कहलाता है।"

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतः इसके द्वारा किये गये अच्छे तथा बुरे कर्मों के प्रभाव से समाज अछूता नहीं रहता है। समाज ही मनुष्य के अच्छे तथा बुरे कर्मों को बतलाता है। इसलिए नीति शास्त्र समाज के प्रत्येक समस्या को समझने का प्रयास करता है।

नीतिशास्त्र को अंग्रेजी में Ethics कहते हैं,
Ethics शब्द ग्रीक भाषा Ethos से बना है।
जिसका अर्थ होता है - आचरण, परम्परा, रीति-
रिवाज। नैतिक नियमों और आदर्शों और मनुष्य
के हित और समाज के स्वरूप पहचाने जाते हैं।
इसी ही परंपरा तथा रीति-रिवाज के नाम से
पुकारे जाते हैं। अतः हम नीतिशास्त्र
मनुष्य के कर्मों के सम्बन्ध में ज्ञान कराती है।
नीतिशास्त्र में नैतिक नियमों का
नैतिक नियमों नैतिक गुण पाया जाता है नैतिक
कहलाता है। नीतिशास्त्र में ऐसे कर्म जिन पर
हम उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ आदि का विचार
नहीं कर सकते हैं, वे अनैतिक कर्म कहलाते हैं।
नीतिशास्त्र में ऐसे गुणों का अध्ययन किया
जाता है जिनसे नैतिक गुण पाये जाते हैं। मानव
जीवन कर्मों पर नैतिक निर्णय करना संभव हो
वे नैतिक कर्म कहलाते हैं।
नीतिशास्त्र कर्म का मापदण्ड है ऐसे कर्म जिनमें
नैतिक गुण तथा उचित-अनुचित, पाप-पुण्य
है, ही नहीं है वहीं ऐसे कर्म जिनमें
इच्छा और संकल्प का अभाव रहता है वे नीति
शून्य कर्म कहलाते हैं। इन कर्मों पर नैतिक
निर्णय नहीं दिया जा सकता। ऐसे बच्चे के
कर्म पर नैतिक विचार नहीं कर पाते हैं।